पाठ 4-0
बच्चों के साथ सम्बन्ध निर्माण करना

एक महत्वपूर्ण अतिथि के लिए तैयारी

आपके घर में आपसे मिलने आ रहे एक महत्वपूर्ण मेहमान की तैयारी के लिए आप क्या करेंगे?

जब वे पहुँचे तो उस महत्वपूर्ण अतिथि का स्वागत करने के लिए आप क्या करेंगे?

अगर वह मेहमान खुद यीशु होते तो क्या होगा? आप और क्या कर सकते हैं?

मत्ती 18:5 पढ़ें

इस आयत में महत्वपूर्ण क्रिया शब्द को रेखांकित करें।

> और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता है
> वह मुझे ग्रहण करता है।
> मत्ती 18:5

"देकोमाई" क्या है?

एक बच्चे को "ग्रहण" करने का क्या अर्थ होता है?

मत्ती 18:5 में अनुवादित "स्वागत" या "ग्रहण" शब्द का ग्रीक शब्द "देकोमाई" है। निम्नलिखित आयत को पढ़ें और ध्यान दें कि प्रत्येक पद्यांश में "देकोमाई" का अनुवाद किस तरह से किया गया है। (नोट: ये आयतें हमेशा बच्चों या सेवकाई का उल्लेख नहीं करते हैं।)

मत्ती 10:14 _____
मत्ती 10:40 _____
लूका 2:28 _____
लूका 16: 4 _____
यूहन्ना 4:45 _____
प्रेरितों 7:38 _____
प्रेरितों 21:17 _____
गलातियों 4:14 _____

हम बच्चों का स्वागत कैसे कर सकते हैं?

मत्ती 18:5 फिर से पढ़ें

एक बच्चा किन बातों पर ध्यान करेंगे, जो उनको आपके घर, कलीसिया या सेवकाई की व्यवस्था में आने पर उन्हें एक स्वागत का एहसास दिला सकता है?

कक्षा के अन्दर और बाहर प्रेम दिखाना

प्रेम और व्यक्तिगत ध्यान दिखाने के लिए कुछ विचार

हम बड़े समूहों के साथ-साथ, नियमित आधार पर बच्चों को प्यार, व्यक्तिगत ध्यान और समर्थन कैसे दिखा सकते हैं? कक्षा में रहते वक्त और कक्षा या कलीसिया के बाहर बच्चों के प्रति उन तरीकों की एक सूची बनाने के लिए मिलकर काम करें जिनसे हम उन्हें प्यार दिखा सकते हैं।

कक्षा के अन्दर	कक्षा के बाहर

समेटें

मरकुस 10:13-16 पढ़ें

बच्चों को प्यार दिखाने और स्वागत करने के लिए यीशु हमारे सबसे अच्छे उदाहरण थे। उन शब्दों पर गोल घेरा करें जो हमें दिखाते हैं कि कैसे यीशु ने बच्चों का स्वागत किया और उन्हें मूल्य दिया।

> फिर लोग बालकों को उसके पास लाने लगे, कि वह उन पर हाथ रखे, पर चेलों ने उन को डांटा। यीशु ने यह देख क्रुध होकर उन से कहा, बालकों को मेरे पास आने दो और उन्हें मना न करो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है। मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाईं ग्रहण न करे, वह उस में कभी प्रवेश करने न पाएगा। और उस ने उन्हें गोद में लिया, और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीष दी॥
>
> मरकुस 10:13-16

बच्चों का स्वागत करना और उनके प्रति प्यार और स्वीकार्यता को दिखाना, बच्चों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने के लिए पहला कदम है जो उन्हें मसीह के शिष्यों के रूप में विकसित करने में उनकी मदद करने में हमें सक्षम बनाएगी।

बच्चों का स्वागत करके और उनके प्रति प्यार और स्वीकार्यता को दिखाकर उनके प्रति अपने रिश्ते को **आप कैसे बेहतर और मज़बूत बनाएँगे?** एक या दो विचारों को लिखें जो आप आने वाले सप्ताह में उपयोग करेंगे।